No. of Printed Pages : 8

एम.टी.टी.-002

00998

POST GRADUATE CERTIFICATE IN BENGALI - HINDI TRANSLATION PROGRAMME (PGCBHT)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2010

एम.टी.टी.-002 : बांग्ला-हिन्दी अनुवाद : तुलना और पुनर्सृजन

समय : 3 घंटा *अधिकतम अंक : 100*

नोट : ***सभी** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

1. **किन्हीं दो** का उत्तर लगभग 300 शब्दों में दीजिए । **10x2=20**
   - (a) बांग्ला और हिन्दी की साहित्यिक-सांस्कृतिक परंपरा की निकटता पर प्रकाश डालिए।
   - (b) बांग्ला और हिंदी की शब्द रचना प्रक्रिया का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।
   - (c) बांग्ला और हिंदी के बीच भाषिक भिन्नताओं पर प्रकाश डालिए।

2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों का हिन्दी पर्याय लिखिए : 5

কোথায়	ওকে
নিয়ে	কেমন
পরের	চড়া
তাড়াতাড়ি	এটুকুই
ছেলেবেলা	দাদা

3. निम्नलिखित हिन्दी शब्दों का बांग्ला पर्याय लिखिए : 5

लेना	बल्कि
मौका	लगभग
शायद	काफी
संपदा	बच्चा
ऊर्जा	सीधे

4. निम्नलिखित कहावतों – मुहावरों में से **किन्हीं पाँच** का हिन्दी अनुवाद करते हुए उनका वाक्य में प्रयोग करें। 10

- আহ্লাদে আটখানা
- কান পাতলা
- ডুমরের ফুল
- পথের কাঁটা
- মাটি হওয়া
- অতি বড় ঘরনী না পায় ঘর
- ইঁট মারলে পাটকেলটি খেতে হয়
- কুয়োর ব্যঙ্গ
- তিলকে তাল করা
- নুন আনতে পান্তা ফুরোয়

5. निम्नलिखित अंशों में से **किन्हीं तीन** का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : **15x3=45**

(a) বিদ্যাসাগর বেশীদিন নিস্তেজ হয়ে বসে থাকতে পারেন না। কর্মচাঞ্চল্য তাঁর রক্তের অন্তর্গত। দেশবাসীর প্রতি ক্ষোভ করে তিনি কিছুদিন নিজেকে গুটিয়ে রাখেন নিরালায়, আবার তাঁকে বেরিয়ে আসতেই হয়, বিধবা আইন পাশ হলেও তার প্রয়োগ ব্যাপক হলনা দেখে তিনি ক্ষুব্ধ হয়েছিলেন। যাঁরা তাঁকে মৌখিক সমর্থন জানিয়েছিলেন, কার্যকালে তাঁরা অনেকেই পিছিয়ে গেছেন। এবার তিনি আবার উদ্যমী হলেন বহু বিবাহ নিষিদ্ধ করবার জন্য। এই বহু বিবাহ নামক সামাজিক ব্যবস্থাই তো বিধবা উৎপাদনের কারখানা। সুতরাং এটা বন্ধ করতে পারলেই মূল সমস্যায় আঘাত করা যাবে। আর একটি উপায় অবলা নারীগণকে স্বাবলম্বী হওয়ার শিক্ষা দেওয়া। গ্রামাঞ্চলে স্কুল খোলার ব্যাপারকে কেন্দ্র করেই সরকারের সঙ্গে তাঁর মতবিরোধ হয়, সেই উপলক্ষ্যে - তিনি চাকুরি পরিত্যাগ করেন। এবার আবার তিনি ব্যক্তিগত উদ্যেগে বালিকা বিদ্যালয় স্থাপনের চেষ্ঠা চালিয়ে যেতে লাগলেন।

(b) বারাণসী শহরটি সম্পর্ক গঙ্গা নারায়ণর কোন সম্যক ধারণা ছিলনা। কোলকাতার চেয়েও এর লোকসংখ্যা বেশী। কত রকমের মানুষ ! সকাল বেলা পথে বেরিয়ে বিভ্রান্ত হয়ে গেল সে।

কত কালের প্রাচীন এই শহর, হিন্দুদের পরম পবিত্র তীর্থ। স্বয়ং শিব এখানে এসে ভিক্ষা নিয়েছিলেন অন্নপূর্ণার কাছ থেকে। আবার এই শহর মুসলমানদের অধীনেও থেকেছে, মন্দিরের পাশাপাশি গড়ে উঠেছে মসজিদ। এক-হিন্দূ জমিদারের হাতে কাশীর জমিদারির স্বত্ব দিয়েছিলেন অযোধ্যার নবাব। আবার এই জমিদারি শাসনের অধিকার অযোধ্যার নবাব দিয়ে দিয়েছেন ইংরেজদের। ফলে এখানে - হিন্দূ মুসলমান এবং ইংরাজ নারী - পুরুষ যত্র তত্র দেখা যায়। ভীরু তীর্থযাত্রীদের দলের পাশ দিয়ে ঘোড়া ছুটিয়ে চলে যায় সাহেব রাজপুরুষ। অথবা ঝমঝম করে তাঞ্জাম হাঁকিয়ে যেতে দেখা যায় কোন আভিজাত মুসলমানকে। আবার এক সঁঙ্গে একদঙ্গল সাধূর শোভাজাত্রায় রাস্তা বন্ধ হয়ে যায়। বিভিন্ন জায়গার রাজা মহারাজারও জাঁকজমকের সঙ্গে আসেন পুন্য অর্জনের জন্য। নানা বয়সের বিধবা ও বৃদ্ধ ধর্মভীর বাঙ্গালীর সংখ্যাও ভীড়ের মধ্যে কম নয়।

(c) ১১ই মে ১৮৫৭ যখন মিরাটের - বিদ্রোহীর। দিল্লীর সিপাহিদের সঙ্গে যুক্ত হয়ে বাহাদুর শাহকে সম্রাট ঘোষণা করল, ব্রিটিশ - বিতাড়ণের সংগ্রাম শুরু হয়ে গেল পুরোদস্তর। ব্রিটিশ বিরোধী অনুষ্ঠানের সেই পর্বে বাংলাদেশে বিদ্রোহ ছড়িয়ে পড়বার প্রয়োজনীয় উপদান

ছিল। এর ঠিক বছরখানেক আগে ঘটিছিল সাঁওতাল বিদ্রোহ। এটি ব্যাপক ভাবে বিস্তৃত না হলেও এর গভীরতা ছিল সুদূরপ্রসারী বাংলার চাষীভাইদের মধ্যে নীলকর সাহেবদের ক্রমবর্দ্ধিত অমানবিক অত্যাচার, পীড়ন, শোষণ ও নির্যাতনের জমাট বাধা ক্ষোভের আগ্নেয়গিরি প্রস্তুত ছিল। শিক্ষিত কিছু বাঙ্গালী, বুদ্ধিজীবী ও ব্রিটিশের উমেদার কিছু জমিদারে শ্রেণীর মানুষ ছাড়া সাধারনের মনে যথেষ্ট পরিমানে অসন্তোষের আগুন - ধিকিধিকি জ্বলছিল। প্রয়জনীয় ভূমি থাকা শক্তেও সুযোগ্য নেতৃত্বের অভাবে বাংলাদেশে ব্রিটিশ বিরোধী বিক্ষোভ তেমনভাবে সাড়া জাগাতে পারেনি। কিন্তু মহাবিদ্রোহ এক রুদ্ধশ্বাস উত্তেজনায় কলকাতা তথা সমগ্র বঙ্গদেশকে ক্ষণিক সময়ের জন্য হলেও উত্তপ্ত করে তুলেছিল।

(d) উদ্বাস্তু পুনর্বাসন বিষয়ে তারাশঙ্কর বন্দোপাধ্যায় যে প্রস্তাব সরকারের কাছে রাখেন তা গ্রহণযোগ্য না হলেও অভিনব ও প্রণিমনযোগ্য নিশ্চয়ই। তারাশঙ্কর লেখেন, "পূর্ব-পশ্চিমের সংখ্যালঘুদের সমস্যা সমাধান করতে পারত বা পারে - গ্রাম।" "পশ্চিমবঙ্গে গ্রামের সংখ্যা ৩৮,৪৭১, এছড়া ৯০ টি মিউনিসিপ্যাল শহর এবং ৫৫টি - মিউনিসিপ্যালিটি বিহীন শহর আছে - অর্থাৎ এগুলি য়ূনিয়ন বোর্ড দ্বারা পরিচালিত। এর মধ্যে অন্তত: পঁচিশ হজার

গ্রাম বেছে নেওয়া যেতে পারত - যে সব গ্রামে গড়ে দশঘর লোকের পূর্ণবাসন হতে পারত। অর্থাৎ তাড়াই লক্ষ পরিবারকে বসিয়ে এক কোটি লোকের পূর্ণবাসন সম্ভবপর হত। শহরাঞ্চলে বিশেষ করে কলকতা অঞ্চলে, যে ভিড় জমেছে - তার লাঘব হতে পারত।

(e) ইদানিং আমার গবেষনার কাজ ইচ্ছে করেই অনেক কমিয়ে দিয়েছি। এটা ক্রমেই বুঝতে পারছি যে গিরিডির মতো জায়গায় বসে আমার গবেষনাগারের সামান্য উপকরণ নিয়ে আজকের যুগে শুধু যে আর বিশেষ কিছু করা যায় না তা নয়, করার প্রয়োজনও নেই। দেশে বিদেশে বহু তরুণ বৈজ্ঞানিক আশ্চর্য সব আধুনিক যন্ত্রপাতি হাতে পেয়ে, এবং সেই সঙ্গে নানান বিজ্ঞান প্রতিষ্ঠান ও বিশ্ববিদ্যালয় পৃষ্টপোষকতায় যে সব কাজ করছে তা সত্যিই প্রশংসনীয়। অবিশ্যি অমি নিজে সমান্য ব্যয়ে মালমশালা নিয়ে যা করেছি তার স্বীকৃতি দিতে বৈজ্ঞানিক মহল কার্পন্য করেনি। সেই সঙ্গে বৈজ্ঞানিকদের মধ্যেই আবার এমন লোকও আছে, যারা আমাকে বৈজ্ঞানিক বলে মানতেই চায়নি। তাদের ধারণা আমি একজন জাদুকর বা প্রেতসিদ্ধ গোছের কিছু, বৈজ্ঞানিকদের চোখে ধূলো দেবার নানা রকম মন্ত্র তন্ত্র আমার জানা আছে, আর তার জোরেই আমার প্রতিষ্ঠা।

6. निम्नलिखित में से **किसी एक** का बांग्ला में अनुवाद कीजिए : 15

(a) महिलाओं की चेतना में परिवर्तन का एक सकारात्मक लक्षण स्वयं महिलाओं में नए जीवनमूल्यों का उदय है। यद्यपि इस पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों की दासता के कारणों का नारीवादी निदान नहीं कहा जा सकता है और न ही इसे पितृसत्ता के समग्र वर्चस्ववादी प्रभाव के खिलाफ संघर्ष का निर्णायक आह्वान माना जा सकता है। फिर भी यह पितृसत्ता द्वारा प्रचारित पारंपरिक सांस्कृतिक आदर्शों का अस्वीकार अवश्य था। इस नई धारणा का एक महत्वपूर्ण तत्व था — महिलाओं के खामोश निजी जीवन के बजाए सार्वजनिक कर्मक्षेत्र में उनकी भागीदारी की आवश्यकता पर बल देना। महिलाओं का तर्क था कि घर हो या बाहर, कोई भी किसी एक (स्त्री या पुरुष) की इजारेदारी नहीं है। पुराने और नए विचारों के बीच इस टकराव का प्रतिभापूर्ण चित्रण दादी और उसकी पोती के बीच एक काल्पनिक विवाद में हुआ है। जहाँ दादी का कहना है कि घर ही स्त्री के लिए एकमात्र उचित स्थान है, वहीं पोती की घोषणा है कि यथार्थ में बाहर की दुनिया ही शक्ति, प्रतिष्ठा और सम्मानित स्थिति की संभावना जुटाती है।

(b) ऐसा करते समय मेरे दिमाग में दो बातें थीं — पहली यह कि जिस जड़ता एकरसता और ऊब को पिछले दस सालों से मैं झेल रहा था उससे निजात पाना बेहद जरूरी था। जरूरी इसलिए कि छोटी से छोटी बात पर भी मेरी झुंझलाहट बढ़ती जा रही थी। बीवी से, बच्चों से, मेहमानों से - गरज कि हर मिलने वाले से जब भी मैं बोलता, झुंझलाकर बोलता, उनपर नाराज हो उठता, उनसे झगड़ा कर बैठता — और यह सब बिनावजह। दूसरी ओर महीने के महीने गुजर जाते, पत्नी के चेहरे पर हँसी क्या, मुस्कान तक न दिखाई पड़ती। इन सारी बातों के लिए उनके पास एक ही जवाब था — "किस्मत"! 'जब मेरी किस्मत में ही ऐसा लिखा है'! 'जब मेरी किस्मत ही ऐसी है'! मेरा उनसे कहना था कि जब उन्हें कारण का पता चल गया है तब तो मुस्कुराने में कोई हर्ज नहीं है और इस तरह रात दिन रोआँ गिराए रखना भी गलत है।